VOL- IX | ISSUE- XI | NOVEMBER | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

अध्यात्म रामायण में वर्णित नारी का स्थान

सुचेता
शोधार्थी
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा
ई मेल- suchetarana34@gmail.com

नारी की स्थिति ही किसी समाज की सभ्यता का सच्चा मापदंड है। संस्कृत साहित्य शास्त्र की भाषा में वाल्मीकि रामायण के लिए कहा गया है कि नारियां इस आदि काव्य का अवलंबन है। वे ही इसके कथानक को गति प्रदान करती है, उसका चरम विकास करती है। यही अध्यात्म रामायण के साथ भी पूर्णतया लागू होता है। अध्यात्म रामायण में कई प्रधान एवं अनुषांगिक नारी पात्रों के विशद चित्र अंकित हैं। ऐसे नारी पात्र जिनके गुण, दुर्गुण, जिनकी महत्ता और दुर्बलता हमारे सम्मुख नारी संस्कृति का एक मिला-जुला रूप उपस्थित कर देते हैं

नारी के तीन रूप :- प्रत्येक नारी के तीन रूप होते हैं।

1. **कन्यात्व**
2. **पत्नीत्व**
3. **मातृत्व ।**

कन्यात्व :- अध्यात्म रामायण में नारी के कन्यात्व पक्ष में कुछ विशेष प्रमाण नहीं मिलते हैं। केवल दशरथ पुत्री शांता का नाम आता है। जो अन्य ग्रंथों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि शांता दशरथ की पुत्री थी, किंतु रोम पाद को गोद दे दी गई थी। इससे यह आभास होता है कि माता-पिता कन्या के लिए व्यग्र नहीं होते थे। कन्या का परिवार में महत्व :- परिवार में कन्या की स्थिति और उसके प्रति किए जाने वाले व्यवहार की समीक्षा की जाए तो यह ज्ञात होता है कि कन्याओं से किसी प्रकार का द्वेष, घृणा, द्रोह नहीं किया जाता था। जन्म के बाद उनका लालन-पालन बड़े मनोयोग से होता था। जनक का कहना है कि सीता को पाने पर मेरी इसमें पुत्रीवत् प्रीति उत्पन्न हो गई।[1,2] यह कथन इस ओर संकेत करता है कि कन्या को अत्यंत प्रीति से पाला जाता था। कैकई का भरत से यह पूछना कि मेरे माता पिता भाई बहन सब कुशल पूर्वक तो है [3] , तथा सीता की विदा करते समय माताओं का रोना [4] यह सूचित करता है कि कन्या के साथ माता-पिता का अत्यंत स्नेह पूर्ण संबंध होता था।

समाज में महत्व :- कुमारी कन्याओं को मांगलिक तथा उनकी उपस्थिति को शुभ शकुन माना जाता था। उनके द्वारा स्वागत सत्कार किया जाना सफलता एवं सौभाग्य का चिन्ह था। राम राज्य अभिषेक के समय दशरथ द्वारा आदेश दिया गया था की सुवर्ण भूषित सोलह कन्याएं मध्य द्वार पर खड़ी रहनी चाहिए [5] । इससे यह स्पष्ट है कि कन्याओं को अत्यधिक महत्व समाज में दिया जाता था।

पत्नीत्व :- कन्याओं को व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा भी दी जाती थी। उन्हें पत्नी विषयक कर्तव्यों का सुचारू रूप से बोध कराया जाता था। सीता को जैसा कि उन्होंने राम के साथ चलने का आग्रह करते समय कहा था, अपने माता-पिता से पत्नी के कर्तव्य को समुचित शिक्षा मिल चुकी थी [6] । देवासुर संग्राम में कैकेयी का अपने पति के साथ जाना यह सिद्ध करता है कि लड़कियां

सैनिक शिक्षा से भी वंचित नहीं रखी जाती थी। जब रथ की धुरी टूट कर गिर गई तब कैकेयी वहां पर अपना हाथ लगाकर वहीं पर धैर्य पूर्वक स्थित रही तथा दशरथ जब शत्रुओं को मार चुके तब उन्हें इसका पता लगा [7] । इससे कैकई की बुद्धिमत्ता का परिचय हमें प्राप्त होता है।

श्वसुर ग्रह एवं वधू :-

अध्यात्म रामायण में सास ससुर एवं पुत्रवधू के बीच नितांत स्नेहसिक्त संबंध चित्रित हुए हैं। सीता को विदा करते समय यही शिक्षा दी गई [8] थी। राम ने वन गमन के समय सास सेवा के लिए ही कहा था [9] । दशरथ और कौशल्या का अपनी पुत्रवधू सीता के प्रति हार्दिक और निश्छल स्नेहा था।

पति के प्रति व्यवहार :-

विवाह के उपरांत यही शिक्षा दी जाती थी कि पति अनुगामिनी रह पतिव्रत धर्म का अवलंबन करना चाहिए [10] । पति के साथ पत्नी को किसी भी तरह के डर की संभावना रही नहीं रहती है। यह सीता के वन गमन के आग्रह से स्पष्ट हो जाता है [11] ।

मातृत्व :- पत्नी के जीवन की गौरवमय परिणीति उसके व्यक्तित्व का पूर्णतम विकास मातृत्व में जाकर होता था। वंश प्रवर्तन ही उसके समस्त स्नेह और सौंदर्य की सफलता का सूचक था। नारी के अस्तित्व की इससे बढ़कर और क्या प्रतिष्ठा हो सकती है, इसलिए ही अध्यात्म रामायण में भी पत्नी को जाया,[12] धात्री इत्यादि शब्दों से संबोधित किया है।

विवाह का महत्व एवं लक्ष्य (संतान प्राप्ति) :-

प्राचीन भारतीयों ने वैवाहिक संबंध को सदा मातृत्व और पितृत्व के महान आदर्शों से गौरवान्वित किया था। वह वर एवं वधू का चयन दंपत्ति के भावी सुख की दृष्टि से नहीं अपितु सुयोग्य पुत्र की प्राप्ति के उद्देश्य से करते थे, जो कुल को अविच्छिन्न बनाए रख सके।

कन्या के अखंड कौमार्य और वर के सच्चरित्र का आग्रह है उनकी भावी संतान की श्रेष्ठता और शुद्धता के लिए किया जाता था। तेजस्वी पुत्रों को जन्म देना भी वंश परंपरा को श्रेष्ठ बनाने की इच्छा से ही प्रेरित रहता था।

संतान स्नेह :-

अध्यात्म रामायण की दृष्टि में गौ का अपने वत्स के प्रति जो ममत्व है वही मातृ स्नेह का सच्चा आदर्श है। इसलिए वह मातृप्रेम की प्रगाढता दिखाने के लिए उसकी उपमा गौ के वत्स से देते हैं। उदाहरणार्थ - राम का वन गमन सुनकर कौशल्या कहती है, कि जिस प्रकार गौ अपने अल्प वयस्क बछड़े को छोड़कर अन्यत्र नहीं रह सकती है उसी प्रकार मैं भी तुझे नहीं छोड़ सकती। [13]

नारी को मोक्ष का अधिकार (अध्यात्म रामायण का वैशिष्ट्य) :-

अध्यात्म रामायण में नारी के प्रति जो विशेषता दिखलाई है वह अवश्य ही प्रशंसनीय है। अध्यात्म रामायण की नारी प्राचीन युग की नारी के समान पुरुष से हीन दृष्टि से नहीं देखी जाती थी। और सबसे विचित्र तो इसमें यह है कि इसमें नारी को ज्ञान प्राप्ति योग्य तथा मोक्ष प्राप्ति योग्य समझा जाता था। अध्यात्म रामायण में सभी नारी पात्र जीवन के अध्यात्म तत्व से सुपरिचित है। साधारण नारियां भी जीवन दर्शन से परिचित होने को उत्सुक दिखाई पड़ती हैं।

राम के जन्म होते ही कौशल्या का राम वंदना करना तथा यह कहना कि आप ही मन वाणी के प्रवेश तथा माया युक्त होकर विश्व रचना करते हैं।[14] इससे यह विदित होता है कि कौशल्या सृष्टि विषयक दर्शन से पूर्ण परिचित थी। अयोध्या कांड में कैकेयी ने राम से क्षमा मांगते हुए अपने ज्ञान का परिचय दिया है। [15] इसी प्रकार शबरी [16], तारा का अरण्य तथा किष्किंधा कांड में राम के साथ हुए वार्तालाप से उन के दर्शन ज्ञान का पूर्ण परिचय मिलता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अध्यात्म रामायण ऐसी रचना है जिसमें नारी को ज्ञान तथा मोक्ष के योग्य अधिकारी समझा गया है। इसलिए ही अध्यात्म रामायण में नारी समाज के प्रति विशेष महत्त्वशाली है। इतना बड़ा अधिकार देना कोई सहज कार्य नहीं है। अतः अध्यात्म रामायण में निश्चय ही नारी बहुत ऊंचे शिखर पर विराजमान है।

संदर्भ सूची :-

1. तामद्राक्षमहं प्रीत्या पुत्रिकाभाव भाविताम - अ.रा.बाल.(6.60) ।
2. मूर्ध्न्यंवघ्राय पप्रच्छ कुशलं स्वकुलस्य सा पिता मे कुशलीभ्राता माता च शुभलक्षणा । अयो.का.(7.60) ।
3. सीतामलिङ्गम रुदतीं मातरः साश्रुलोचनाः। बा.का.(6.80) ।
4. श्वप्रभाते मध्यकक्षे कन्यकाः स्वर्णभूषिताः....अ.का.(2.9) ।
5. त्वदनन्यमदोषां मां धर्मज्ञोऽसि दयापरः। त्वतसमीपे स्थितां राम वा मां घर्षयेद्वने .....।।अयो.का.4.(72-75) ।
6. जगाम सेनया सार्धं त्वया सह शुभानने युद्धं प्रकुर्वतः तस्य राक्षसैः सह धन्विनः ...अयो.का. 2.(67-69) ।
7. श्वश्रूशुश्रूषणपरा नित्यं राममनुव्रत। बा.का.(6.81)।
8. अथैव वनं यास्यामि त्वं तु श्वश्रुसमीपगा शुश्रूषां कुरु मे मातु.......। अयो. का.(4.58) ।
9. पातिव्रतेमुपालम्भ्य तिष्ठ वत्से यथा सुखम्। बा.का.(6.81) ।
10. अयो.का.4 (74 -75) ।
11. मम जायेति सीतेति विललापातिदुखितः। अर.का.8.20 ।
12. यथा गोबालकं वत्सं व्यक्त्वा। तिष्ठेन्न कुत्रचित् तथैव त्वां न शक्नोमि व्यक्तुं प्राणात्प्रियं सुतम् । अय.का.(4.9) ।
13. बा. का. 3.(21 - 22) ।
14. त्वं साक्षाद् विष्णुरव्यक्तः परमात्मा सनातनः........ अ.का. 9 (57 - 59) ।
15. कथं रामाद्या मे दृष्टस्त्वं मनोवागगोचरः.......अर.का.(10.19) ।
16. देहो चित्काष्ठवद्राम जीवो नित्यश्चिदात्मकः.......किष्क.का.(3.17) ।